करे भावु भगति, सामी तरु संसारु तूं,
बेड़ी करि वेसाह जी, चपो महबत मति,
सतिगुरु पुरुखु मलाहु करि, पतणु कढ कुमति,
साखी जाणी सति, त पहुचें पारि भरम खों.

मनुष्य मात्र को उपदेश करते हुए महाकवि सामी कहते हैं कि 'हे मनुष्य ! तुम परमात्मा की भक्ति करके यह भवसागर तैरने का, मुक्ति पाने का प्रयास करो। इस महत् कार्य को संपन्न करने के लिए तुम विश्वास-रूप नाव ले लो, जिसका चप्पू (पतवार) प्रेम का हो। ऐसी नाव में बैठो, जिसके चलाने वाले स्वयं सद्गुरु हों। इसके लिए तुम कुमति रूप, बुरी मति रूप उतराई (नाव द्वारा पार उतारने का किराया) निकाल ले। उसके पश्चात् सत्य (परमेश्वर) को साक्षी मानकर यात्रा करोगे तो भ्रम/भ्रांति के पार पहुँच जाओगे।'

परमार्थ या अध्यात्म में भक्ति की बड़ी महिमा है। परमात्मा के प्रति प्रेम ही भक्ति है। परमेश्वर की अहंशून्य सेवा भक्ति है। जीव या भक्त के हृदय में यदि भक्ति की भावना नहीं होगी तो मात्र विद्वत्ता अथवा जप-तप का कोई महत्व नहीं रह जाता । नारदीय भक्ति प्रेम-स्वरूप एवं अमृत-स्वरूपा है। वह प्राप्त हो जाने पर मनुष्य अमर हो जाता।

मनुष्य का उद्देश्य संसार सागर को पार कर मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति करना है। इसके लिए इस असत्य, मिथ्या, भ्रममय संसार से बाहर निकल कर आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए सद्गुरु की कृपा प्राप्त करनी है। भीतर से अंधकार, अज्ञान दूर करना है। तभी जीव या साधक आगे बढ़ सकेगा। यह बात समझाने के लिए सामी साहब एक रूपक का प्रयोग करते हैं। संसार का सफर ऐसा है, जैसे नाव द्वारा नदी पार की जाती है। संसार रूपी दरिया पार करना बड़ा ही कठिन कार्य है। इसके लिए सत्य की नाव और नाविक के रूप में सद्गुरु की आवश्यकता है। परमेश्वर का स्मरण कर आगे बढ़ना है। अपने मन से बुरे विचार एवं विकार त्याग कर सद्गुरु के सहारे अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है। सद्गुरु की कृपा मनुष्य के उत्थान के लिए कारणीभूत बन जाती है। क्यों कि सद्गुरु साक्षात् परमेश्वर-स्वरूप होते हैं। सामी साहब ने परोक्ष रूप में सद्गुरु कृपा एवं मार्गदर्शन के महत्व को रेखांकित किया है। सद्गुरु की कृपा से सामान्य मनुष्य भी असामान्य पद-प्राप्ति का अधिकारी बन सकता है, अपना जीवन सार्थक कर सकता है।

■